

हिन्दी उपन्यास के शिखर

साहित्य अकादमी से पुरस्कृत उपन्यास

डॉ. एम. फीरोज़ खान
डॉ. शगुफ़ता नियाज़



प्रस्तुत पुस्तक वाङ्मय पत्रिका के साहित्य अकादमी से पुरस्कृत
केंद्रित अंक से साभार ली गई है।

ISBN: 978-93-84397-31-9

प्रकाशक :

उत्कर्ष पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स

A-685, आवास विकास, हंसपुरम्,

कानपुर – 208021 (उ.प्र.)

Email : utkarshpublishers@gmail.com

Mob.: 09792149791, 07754901122

संस्करण : प्रथम 2017

© सम्पादक

मूल्य : 450/-

कम्प्यूटर कम्पोजिंग : शानू, कानपुर

मुद्रक : साक्षी आफसेट, यशोदा नगर, कानपुर

डॉ. जय कौशल	
भूले बिसरे चित्र	1
डॉ. नीरू	
अब लौं नसानी, अब न नसैहों (संदर्भ: जैनेन्द्रकृत मुक्तिबोध)	8
डॉ. पान सिंह	
जैनेन्द्र के उपन्यास मुक्तिबोध में वर्णित राजनीतिक समष्टि-व्यष्टि	17
प्रो. आनन्दप्रकाश त्रिपाठी	
अमृत और विष : बौद्धिक वर्ग के मानस विभाजन का चित्र	28
प्रो. शैलेन्द्रकुमार शर्मा	
राग दरबारी : चहुं ओर व्याप्ति मूल्यहीनता की व्यंग्यात्मक निष्पत्ति	44
डॉ. मेराज अहमद	
विभाजन कालीन वैचारिक दस्तावेज : तमस	55
मधुरेश	
अपनी ही परम्परा का अतिक्रमण : मेरी तेरी उसकी बात	68
डॉ. मेराज अहमद	
कृष्णा सोबतीकृत ज़िन्दगीनामा : पंजाब की ग्रामीण	
संस्कृति का दस्तावेज	79
शिवचंद प्रसाद	
मध्यकालीन काशी : पुनर्वृत्तांत और लोकोन्मुखी यथार्थ	89
डॉ. अवध बिहारी पाठक	
कब टूटेंगी-चाल के ये अनुपात, बकौल-ढाई घर	98
योजना कालिया	
स्त्री-पुरुष संबंध की नई व्याख्या : अर्द्धनारीश्वर	104
डॉ. रमाकान्त राय	
स्त्री मुक्ति की संघर्ष भरी महागाथा-मुझे चाँद चाहिए	111
डॉ. रेणु व्यास	
खिड़की से झांकता एक प्यारा-सा सपना	117

अमृत और विष : बौद्धिक वर्ग के मानस विभाजन का चित्र

प्रो. आनन्दप्रकाश त्रिपाठी

1956 में 'बूँद और समुद्र' जैसा बृहदाकार सुपर हिट महाकाव्यात्मक उपन्यास रचकर अमृतलाल नागर ने साहित्य की दुनिया में एक विशिष्ट कथाकार के रूप में अपनी पहचान कायम की। यद्यपि 1947 में वे 'महाकाल' (भूख) उपन्यास का सृजन कर चुके थे। सन् 1966 में 'अमृत और विष' लिखने के पूर्व 'शतरंज के मोहरे' (1959) एवं 'सुहाग के नूपुर' (1960) उपन्यास के प्रकाशन ने नागर के कथाकार की प्रतिष्ठा को और पुख्ता किया। 'बूँद और समुद्र' की भाँति बृहदाकार 'अमृत और विष' उपन्यास लिखकर नागर जी ने पाठकों और आलोचकों दोनों को ही अपनी उपन्यास-लेखन-सामर्थ्य, कथा शिल्प, भाषा, प्रयोगधर्मिता और व्यापक जीवन दृष्टि से गहरे तक प्रभावित किया है। निश्चय ही वे लेखन की एक नई मंजिल पा चुके थे। 'बूँद और समुद्र' के बाद एक बार फिर लखनऊ और वहाँ का राजनीतिक, सामाजिक और सांस्कृतिक परिदृश्य 'अमृत और विष' उपन्यास के कथा-केन्द्र में उपस्थित हुआ है। लेखक के अनुभव जगत के सैकड़ों स्त्री-पुरुष पात्र अपनी-अपनी जिंदगी का रंग-ढंग और विचार लिए हुए तमाम सामाजिक घटनाक्रमों, हलचलों, परिस्थितियों के बीच में सांस लेते हुए हमें दिखायी पड़ते हैं। इस उपन्यास में लेखक स्वयं को भी अनुपस्थित नहीं रख सका है। अरविंद शंकर को नागर का ही प्रतिरूप कहा गया है।

'अमृत और विष' का वैशिष्ट्य यह भी है कि 1968 में इसे 'साहित्य अकादमी पुरस्कार' और 1970 में 'सोवियत लैंड नेहरू पुरस्कार' मिला। कथाकार नागर के लिए यह बड़ी उपलब्धि थी और फिर आगे नागर जी की क्रमशः सात घूँघट वाला मुखड़ा, एकदानैमिषारण्ये, मानस का हंस, नाच्यौ बहुत गोपाल, खंजन नयन, बिखरे तिनके, अग्निगर्भा, करवट और पीढ़ियाँ जैसी महत्त्वपूर्ण और लोकप्रिय औपन्यासिक कृतियाँ प्रकाश में आयीं जो पाठकों व साहित्यकारों द्वारा भरपूर समादृत हुईं।

'अमृत और विष' अपनी कथावस्तु और शिल्प विधान के लिए विशेष चर्चित हुआ। उपन्यास के भीतर एक और उपन्यास रचकर नागर जी ने अपने श्रेष्ठ कथाशिल्पी होने